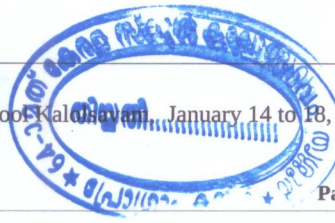




रमाई या फुकार ?

यह कैसा मौसम है ? वसंत या शैत्य
क्या यह गर्म है या ठंड ?
खुद को भी महसूस न कर सकते ।
फिल वस जिंदा है
माँ हँ मँ, लेकिन अब सूखा
प्यार से नहीं, अमृत से ।
अपने बच्चों को छू भी न सकती ।
उनके पैरों में हमेशा जूता रहते हैं
तो माँ की गमी अन्य रहेगा,
और जब वह जंगे पैरों से आते हैं,
तब प्लास्टिक मेरी कपड़े बगते हैं ।
मुश्कुराना अब याद नहीं क्योंकि,
बच्चे एक दूसरे से लड़ रहे हैं ।

साँस भी न ले सकती
गला सूखा है लेकिन फिल नहीं
फुकारा - पानी के लिए
और मिनी एक नदी - खुश की ।
कहीं मेरी कपड़े, सब कहीं छोटे हैं
उसे चुपाना है, नहीं तो 'लोप क्या कहेंगे' ?



जिंदगी 'रंग' खो रही है
हरियाली अब वही कपड़े जैसे।
इधर-उधर टुकड़ों में...
जिंदगी 'रंग' खो रही है
फिर भी बैटियों के शवदाह
नाल रंगीन कम्बल में।

सुबह हो या रात, रेशमी मुश्किल में है।
किसी खिड़की से मेरी जिंदगी में आगे कैलिए।
जब मैं रेशमी में माता हो, केवी हो,
वही रेशमी के अभाव में खेलने की चीज।
प्यासी है तो बारिश नहीं, झुका है तो हवा भी
पर 'कुफाव' है जब बस एक दिया जलता है।

राष्ट्र नेता अंधा हो गया
बस पैसे देख सकते हैं उन्हें
उन कैलिए देश भी पैसे
जान और प्रकृति भी पैसे।
क्या वह यह न जानते
कि सच्चाई अब 'मीठा' नहीं 'कड़वा' है १



Item Code: 958

Participant Code: 037

सब इशे हैं सच से
क्योंकि उनका रंग लाल है
क्योंकि उनका गंध अम्ल का है
क्योंकि उनका आवाज रुलाई है
लेकिन वही 'सच' में प्यार है
जीवन और सम्मान है।

मर रही हूँ मैं।
माँ से इर नहीं मुझे...
बस इस जिंदगी से है...
जिस समाज मुझे बस मिट्टी मानता है, उससे
जिस बच्चे मेरी प्यार और त्याग न समझते, उससे
वे यह न जानती कि मैं माँ हूँ...
सबसे प्यारी...
और काली भी...
सबसे ताकत वाली...

खतम हो गई मेरी आँसू
अब उनका रंग लाल हो गया।
पाणी का प्यास बुझा न पाया

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).



लोकिय अब भी प्यासी हूँ - प्यार कैलिए ..

मैं मिट्टी हूँ ..

मुझसे जीवन उभरती हूँ।

लोकिय इस यत्न ..

मेरी वह कोली' रूप भी ..

वात यह सब सिर्फ मेरी नहीं

मेरी उन बच्चों का भी ..

जो मरने के पहले मर' जाता है

काव्य नहीं यह,

माँ की रुलाई है

माँ की फुहार है ..

मिट्टी की फुहार है !